मराठी भक्ति साहित्य : संत तुकाराम

डॉ. गोविन्द प्रसाद वर्मा
(सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी (बिहार)- 845401
Email: govindprasadverma@mgcub.ac.in

स्नातक (प्रतिष्ठा) हिंदी, छठा सेमेस्टर
प्रश्नपत्र: भारतीय भक्ति साहित्य (HIND3025)

विषय-सूची

- संत तुकाराम : जीवन परिचय एवं रचनाएँ
- भक्ति का स्वरूप
- दार्शनिक चिंतन
- सामाजिक दर्शन
- शिल्प पक्ष
- निष्कर्ष
- संदर्भ-ग्रंथ-सूची

❖ संत तुकाराम* : जीवन परिचय एवं रचनाएँ

- मराठी साहित्य में 11 वीं शताब्दी तक अनेक भक्ति संप्रदायों का आविर्भाव हुआ | भक्ति परंपरा की दृष्टि से 'वारकरी संप्रदाय' प्रमुख रहा है |
- वारकरी संप्रदाय के ईष्ट (भगवान) 'विट्ठल' हैं | 'विट्ठल' का मंदिर पंढरपुर में है |
- वारकरी का अर्थ- यात्रा करने वाला | विट्ठल का स्वरूप- 'खड़ा ईंट पर भगवान् कृष्ण का हाथ कमर पर और सिर पर शिवलिंग' (इसे हरिहर के रूप में भी देखा जाता है) | पंढरपुर- पुंडरीक नामक भक्त के नाम पड़ा |
- इसी वारकरी संप्रदाय को व्यवस्थित और प्रतिष्ठित करने का श्रेय संत ज्ञानेश्वर (1275 ई. – 1296 ई.) को दिया जाता है |

- संत तुकाराम (दूसरा नाम- तुकोबा) का जन्म 1608 ई. में 'देहू' गाँव में हुआ, ऐसा माना जाता है | यह गाँव इंद्रायणी नदी के तट पर स्थित है | इसी नदी के किनारे आलंदी गाँव है, जहाँ ज्ञानेश्वर समाधिस्थ हुए थे |
- उनके पिता का नाम बोल्हाजी औए माता का नाम कनकाई था | उनके दो भाई थे | उनसे बड़े सावजी और छोटे कान्होबा |
- तुकाराम वणिज जाति से थे | उनकी जाति महाराष्ट्र में शूद्र मानी जाती थी | परंतु, परिवार संपन्न था |
- तुकाराम की 12-13 वर्ष की अवस्था में ही दो विवाह हो गया | पहली पत्नी- रखुराई और दूसरी- जीजाबाई |

- तुकाराम जब 17 वर्ष के थे, तब उनके माता-पिता की मृत्यु हो गयी | उसके कुछ समय पश्चात् ही उनकी भाभी का भी निधन हो गया | जिस कारण से उनके बड़े भाई संन्यासी हो गये और परिवार की सारी जिम्मेवारी तुकाराम के ऊपर आ गयी |
- महाराष्ट्र में सन् 1629 ई. में भयंकर अकाल पड़ा, जिसमें उनकी बड़ी पत्नि और बड़े बेटे की अन्न के अभाव में मृत्यु हो गयी |
- इसी घटना के बाद तुकाराम को संसार से वैराग्य हो गया और वे आध्यात्मिक जीवन की तरफ बढे | वे भामनाथ और भंडारा पर्वत पर जाकर भगवत् विषयक चिंतन करने लगे |
- तुकाराम के गुरु बाबा चैतन्य माने जाते हैं | उन्होंने तुकाराम को स्वप्न में 'राम कृष्ण हरी' का मंत्र दिया था |

- शिवाजी महाराज पुणे से देहू गाँव आकर उनके अभंगों का रसपान किया करते थे | तुकाराम ने शिवाजी के आर्थिक सहयोग को अस्वीकार कर दिया था |
- उनके व्यक्तित्व का निर्माण समन्वय की भाव-भूमि पर हुआ था | उनकी दृष्टि में सगुण-निर्गुण, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब में कोई भेदभाव नहीं था |
- तुकाराम ने संत नामदेव से प्रभावित होकर अभंगों की रचना की थी | उनकी रचनाओं का संग्रह 'अभंगगाथा' है | उनके प्रपौत्र ने लिखित और मौखिक परंपरा में उपलब्ध अभंगों का संकलन सन् 1867 ई. में किया था |
- तुकाराम की हस्तलिखित पांडुलिपियों को इंद्रायणी नदी में डुबो दिया गया था | वे पांडुलिपियाँ 13 वें दिन नदी के ऊपर तैरती हुई मिलीं तथा वहीं तुकाराम को ईश्वर का साक्षात्कार भी हुआ |
- उनकी मृत्यु सन् 1649 ई, को हो गयी |

❖ भक्ति का स्वरूप

- तुकाराम निर्गुण-सगुण का भेद नहीं करते हैं , बल्कि उनमें समन्वय स्थापित करते हैं और एक दूसरे का पूरक मानते हैं |
- उनकी दृष्टि में भक्तियोग, ज्ञानयोग और कर्मयोग दोनों से श्रेष्ठ है | वे अभक्त ब्राह्मण से भक्त शूद्र को श्रेष्ठ मानते हैं |
- भक्ति के द्वारा ही – दया, क्षमा, शांति जैसे उदात्त और सात्विक भावों को पाया जा सकता है |
- वे नाम महिमा पर बल देते हुए कहते हैं कि हरिनाम स्मरण से मन के समस्त विकार दूर हो जाते हैं | उसी से भक्त ईश्वर को प्राप्त कर लेता है |
- तुकाराम मानते हैं कि भक्ति के लिए संसार त्याग की आवश्यकता नहीं है |

❖ दार्शनिक चिंतन

- तुकाराम मनुष्य जीवन के मूलभूत तत्त्वों की खोज को महत्त्वपूर्ण मानते हैं | वे मनुष्य जाति में व्याप्त दुःख को दूर करने की आवश्यकता पर बल देते हैं |
- सगुण और निर्गुण ईश्वर एक है, जैसे- नदी, सरोवर, कुंड आदि अलग-अलग होते हुए भी सबमें एक ही जल तत्व है | वे मानते हैं कि सभी प्राणियों में ईश्वर का अंश है | वे कहते हैं –

  सगुण-निर्गुण तुज म्हणे वेद |

  तुका म्हणे भेद नाही नामी ||

- तुकाराम गुरु को महत्त्व देते हुए भी, गुरु परंपरा का विरोध करते हैं |

❖ सामाजिक दर्शन

- मराठी संतों ने वारकरी संप्रदाय के माध्यम से कुल,जाति, समूह, वर्ण, धर्म आदि की श्रेष्ठता और कट्टरता के स्थान सामाजिक समता और बंधुत्त्व की स्थापना की |
- ऐसे ही सामाजिक विषमता और अन्यायपूर्ण वातावरण में संत तुकाराम का आविर्भाव हुआ | उन्होंने आंतरिक प्रेरणा और अनुभूति की समानता से, बंधुत्व के प्रचार से, आध्यात्मिक चिंतन से, मनुष्य की श्रेष्ठता को सिद्ध किया |
- तुकाराम यह मानते हैं कि मनुष्य को ईश्वर भक्ति के साथ-साथ सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहना चाहिए |

- तुकाराम संतों के चरित्र का चित्रण करते हुए कहते हैं कि – *"जिस प्रकार पुत्र को पढ़ाने के लिए पिता या गुरु को हाथों में तख्ती उठाना पड़ता है , उसी प्रकार संत समाज के हित के लिए कार्यशील रहते हैं | बालक को चलना सीखाने के लिए माता उसे हाथ पकड़कर चलना सीखती है, वैसे ही संत जन-कल्याण के लिए कार्य करते हैं |"*

- उन्होंने धार्मिक और सामाजिक बाह्याचारों – ढोंग, आडंबर, कर्मकांड,अंधविश्वास आदि का विरोध किया |

- उनके समय में शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं था | इसलिए तुकाराम पर वेदों के ज्ञान को शूद्र होते हुए भी सामान्य जन में बाँटने का आरोप लगाया गया |

- तुकाराम ने वर्ण-व्यवस्था से उपजी जन्म आधारित जाति-व्यवस्था, छूआछूत, भेदभाव आदि का विरोध किया |

❖ शिल्प पक्ष

- तुकाराम मूलतः भक्त होते हुए, कवि भी थे |
- उन्होंने काव्यशास्त्र का अध्ययन नहीं किया था | परंतु, उनका भावबोध, विचार और प्रतिभा उच्च कोटि की थी |
- तुकाराम के काव्य की भाषा मराठी है | उनके अभंग जन सामान्य अर्थात अनपढ़ और शिक्षित समुदाय दोनों में लोकप्रिय है | इसीलिए उनकी गिनती महाराष्ट्र के सर्वाधिक लोकप्रिय कवियों में होती है |
- उनके अभंगों में मराठी के अतिरिक्त संस्कृत, उर्दू, फारसी के शब्द भी मिलते हैं |

- तुकाराम की भाषा में जन सामान्य में प्रचलित लोकोक्ति और मुहावरे का प्रयोग मिलता है |

- उन्हें हिंदी भाषा का पर्याप्त ज्ञान था | अतः कुछ रचनाएँ हिंदी में भी मिलती है |

- तुकाराम के काव्य में अलंकारों का सहज प्रयोग मिलता है | उनके अभंगों में प्रतीक योजना (ब्रह्म, जीव, माया आदि को लेकर) भी मिलती है |

- मराठी के लोकप्रिय छंदों में 'अभंग' का प्रथम स्थान है | तुकाराम ने 'अभंग' और ओवी छंद का प्रयोग किया है |

- तुकाराम की रचनाएँ छंदबद्ध हैं, इसलिए पदों में लय और नादमाधुर्य मिलता है | उनके अभंगों की जनप्रियता का कारण यह भी है |

❖ निष्कर्ष

- तुकाराम ने संत नामदेव से प्रभावित होकर अभंगों की रचना की थी | उनकी रचनाओं का संग्रह 'अभंगगाथा' है | उनके प्रपौत्र ने लिखित और मौखिक परंपरा में उपलब्ध अभंगों का संकलन सन् 1867 ई. में किया था |
- तुकाराम निर्गुण-सगुण का भेद नहीं करते हैं , बल्कि उनमें समन्वय स्थापित करते हैं और एक दूसरे का पूरक मानते हैं | वे नाम महिमा पर बल देते हुए कहते हैं कि हरिनाम स्मरण से मन के समस्त विकार दूर हो जाते हैं | उसी से भक्त ईश्वर को प्राप्त कर लेता है |
- मराठी संतों ने वारकरी संप्रदाय के माध्यम से कुल,जाति, समूह, वर्ण, धर्म आदि की श्रेष्ठता और कट्टरता के स्थान सामाजिक समता और बंधुत्त्व की स्थापना की |
- तुकाराम ने वर्ण-व्यवस्था से उपजी जन्म आधारित जाति-व्यवस्था, छूआछूत, भेदभाव आदि का विरोध किया | उन्होंने धार्मिक और सामाजिक बाह्याचारों – ढोंग, आडंबर, कर्मकांड,अंधविश्वास आदि का विरोध किया |
- तुकाराम के काव्य की भाषा मराठी है | तुकाराम की रचनाएँ छंदबद्ध हैं, इसलिए पदों में लय और नादमाधुर्य मिलता है | उनके अभंगों की जनप्रियता का कारण यह भी है |

❖ संदर्भ-ग्रंथ–सूची

- मराठी का भक्ति साहित्य : प्रो. भो. गो. देशपांडे, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी
- हिंदी को मराठी संतों की देन : विनय मोहन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
- संत तुकाराम : हरि रामचंद्र दिवेकर, हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद
- श्री तुकाराम चरित : लक्ष्मणरामचंद्र पांगारकर, गीता प्रेस, गोरखपुर
- www. egyankosh.ac.in
- https://youtu.be/F_d96SXAoKg (* इस लिंक से संत तुकाराम पर बनी फ़िल्म देख सकते हैं |

धन्यवाद !